

## दुसला मसल कर्तबक सलकुलतलतलस सलतक कले केसेकु?

उदाहरण के तौर पर इस्लाम की आर्थिक व्यवस्था और पूंजीवाद तथा समाजवाद के बीच एक सरल तुलना से यह स्पष्ट हो जाता है कि इस्लाम ने यह संतुलन कैसे सुनिश्चित किया है।

स्वामित्व की स्वतंत्रता के संबंध में :

पूंजीवाद में : निजी संपत्ति ही सामान्य सिद्धांत है।

समाजवाद में : सार्वजनिक स्वामित्व ही सामान्य सिद्धांत है।

जबकि इस्लाम में : विभिन्न प्रकारों के स्वामित्व की अनुमति है :

सार्वजनिक स्वामित्व : यह सभी मुसलमानों के लिए सामान्य है। जैसे आबाद भूमि।

राज्य का स्वामित्व : वन और खनिज जैसे प्राकृतिक संसाधन।

निजी संपत्ति : यह केवल निवेश कार्य के माध्यम से इस तरह से अर्जित की जाती है कि उससे सामान्य संतुलन को खतरा न हो।

आर्थिक स्वतंत्रता के संबंध में :

पूंजीवाद में : आर्थिक स्वतंत्रता असीमित है।

समाजवाद में : आर्थिक स्वतंत्रता पर पूर्ण कंट्रोल है।

इस्लाम में, आर्थिक स्वतंत्रता को एक सीमित दायरे में मान्यता प्राप्त है, जिसका प्रतिनिधित्व निम्न में होता है :

इस्लामी शिक्षा और समाज में इस्लामी अवधारणाओं के प्रसार के आधार पर आत्मा की गहराइयों से उत्पन्न होने वाली आंतरिक हदबंदी।

निष्पक्ष हदबंदी, जिसका प्रतिनिधित्व सीमित करने वाले कानूनों के द्वारा होता है, जो विशिष्ट कार्यों पर रोक लगाते हैं जैसे : धोखा, जुआ, सूदखोरी इत्यादि।

"ऐ ईमान वालो ! कई-कई गुणा करके ब्याज न खाओ। तथा अल्लाह से डरो, ताकि तुम सफल हो।"  
[191] [सूरा आल-ए-इमरान : 130]

"और तुम ब्याज पर जो (उधार) देते हो, ताकि वह लोगों के धनों में मिलकर अधिक हो जाए, तो वह अल्लाह के यहाँ अधिक नहीं होता। तथा तुम अल्लाह का चेहरा चाहते हुए जो कुछ ज़कात से देते हो, तो वही लोग कई गुना बढ़ाने वाले हैं।" [192] [सूरा अल-रूम : 39]

